SWAARNIM FOUNDATION

स्वर्णिम

Whatsapp पर मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें ।

वर्ष 01 - अंक 04 | डिजीटल मासिक पत्रिका - अक्टूबर 2023 | कुल पृष्ठ - 22

छत्तीसगढ़ विधानसभा में वीरेन्द्र कुमार जैन का गौमूत्र चिकित्सा पर स्पीच

छत्तीसगढ़ विधानसभा में पंचगव्य पर स्पीच देते हुए वीरेन्द्र कुमार जैन, समीप हैं नेता प्रतिपक्ष, तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद शुक्ल, तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी

छत्तीसगढ़ विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल ने गौमूत्र चिकित्सा पद्धति से अपना इलाज जैन्स काऊ यूरीन थैरेपी से अपना इलाज किया । गौमूत्र चिकित्सा से हुए लाभो से वो इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने खोजकर्ता एवं शोधकर्ता वीरेन्द्र कुमार जैन को छत्तीसगढ़ की विधानसभा में स्पीच के लिए आमंत्रित किया । इसमें तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी सहित सभी मंत्री एवं विधायक सम्मिलित हुए। जैन ने अपना प्रभाव शाली व्याख्यान देते हुए बतलाया कि दुनिया में गोमूत्र ही एक मात्र ऐसी मेडिसिन है जो प्रत्येक रोग में कारगर काम करती है ।

यह सिर्फ दवा नहीं है, श्री जैन डायबिटिज, ब्लडप्रेशर, अस्थमा, सोरायसिसस, कैंसर और एड्स से पीड़ित 12 लाख से ज्यादा मरीजों को दुर्लभ जड़ी–बुटियों, गोमूत्र और पंचगव्य के निश्चित अनुपातों में बनाई गई औषधियों से लाभ पहुंचा

स्वर्णिम मासिक पत्रिका स्वताधिकारी स्वर्णिम फ़ाउंडेशन इंदौर के लिए प्रकाशक/ मुद्रक/ प्रबंध संपादक रेखा जैन द्वारा सुगन ग्राफिक्स ट्रेड सेंटर साउथ तुकोगंज से मुद्रित करवाकर स्वर्णिम फ़ाउंडेशन से प्रकाशित। प्रधान संपादक वीरेन्द्रकुमार जैन। संपादक मंडल – विवेक जैन,कपिल जैन,शारदा जैन,पूजा जैन,विशाल जोशी

छत्तीसगढ़ विधानसभा के सभी मंत्री एवं विधायकगण

चुके हैं । डायबिटीज के जिन मरीजों को इंसुलिन या और दवाईयां चल रही थी, वह उनके इलाज से शुगर सामान्य हो गई । जहां कीमोथैरेपी और रेडिएशन्स के बावजूद कैंसर ठीक नहीं हुआ था, वहां श्री जैन के इलाज से कैंसर हारने लगा । अनुभव में यह भी आया है कि जैसे ही मरीजों को मालूम हुआ कि उन्हें कैंसर है उन्होंने एलोपैथी ट्रीटमेंट के साथ ही तुरन्त जैन्स काउ यूरीन थैरेपी से इलाज प्रारंभ कर दिया, उन्हें बहुत अच्छे परिणाम मिल गए। जिन मरीजों को कैंसर के प्रारंभिक लक्षण दिखे या शंका हुई उन्होंने भी श्री जैन से प्रीवेण्टिव इलाज करवाकर बीमारी को बढ़ने से रोक लिया ।

कहा जाता है कि दमा दम के साथ ही निकलता है, लेकिन अस्थमा के ऐसे हजारों मरीज जो 10–20 साल पुराने मरीज थे, श्री जैन के इलाज से अस्थमा से राहत पा चुके हैं । श्री जैन ने इसे मिशन बना लिया है । उनके साथ एलोपैथिक और आयुर्वेदिक डॉक्टरों और अनुभवी वैद्यों की टीम है, जिनके द्वारा ऊपर बताई गई बीमारियों के अलावा ब्लडप्रेशर, हृदयरोग, यौन दुर्बलता, गठिया स्पाण्डोलाइटिस, सायटिका, स्त्री रोग, चर्मरोग, प्रोस्टेट, लीवर और किडनी के रोग, एसिडिटी, कब्जियत, गैस की समस्या, माइग्रेन, पथरी, थायराइड, तनाव सहित अनेक रोगों के मरीजों पर क्लीनिकल

तत्कालीन छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद शुक्ल के आमंत्रण पर पहुँचे वीरेन्द्र कुमार जैन

ट्रायल किया गया एवं सफलतम परिणाम पाये गये । आयुर्वेद मानता है कि पाचन तंत्र की विकृति ही अन्य सभी दीर्घकालिक रोगों का कारण बनती है । लिहाजा यह अनुसंधान किया गया कि गोमूत्र चिकित्सा पद्धति पाचन तंत्र की विकृतियों से बचाव और उनका उपचार करती है ।

जैन्स काउ यूरीन थैरेपी हेल्थ क्लीनिक इन्दौर पर पूरे देश एवं विदेशों से मरीज आते हैं, जिनमें उपरोक्त वर्णित बीमारियों के अलावा हेपेटाइटिस बी व सी, ट्राइजेमिनल न्युरेल्जिया,मल्टीपल स्कलेरोसीस, एस.एल.ई, सिकल सेल एनीमिया, मसल्स डिस्ट्रॉफी, मायोपैथी, पार्किंसंस, थेलीसिमिया, हीमोफिलिया, आस्टियोपोरासिस, ओलिगोस्पर्मिया, एन्कॉइलेजिंग स्पाण्डीलाइटिस, मोटर न्यूरान डिसीज, सेरेब्रल पाल्सी, सेरेब्रलएट्राफी, हाईड्रोकेफेल के भी मरीज आए है एवं इस चिकित्सा का लाभ उठा रहे हैं ।

श्री जैन ने विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक टीम के माध्यम से गोमूत्र में पाए जाने वाले तत्वों का वर्गीकरण करवाया और उसमें उचित मात्रा और अनुपात में दुर्लभ जड़ी–बूटियों का समावेश करवा कर प्रमाणित दवाइयों का व्यापक पैमाने पर निर्माण शुरु कर दिया । इस दौर की व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता

वीरेन्द्र कुमार जैन से गोमूत्र चिकित्सा से लाभान्वित मरीजों की जानकारी लेते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी

से इसकी संरक्षा करने के लिए इस पद्धति के पेटेण्ट का आवेदन किया गया । भारत सरकार के पेटेण्ट ऑफिस ने गोमूत्र आधारित चिकित्सा पद्धति आयुर्वेदिक थेराप्यूटिक फार्मूलेशंस के अनुसंधान को पेटेण्ट दिया है । आज श्री जैन के पास ऊपर वर्णित तमाम रोगों के लिए गोमूत्र आधारित उपचार मौजूद है, जिनसे लगभग 5 लाख मरीज लाभन्वित हो चुके हैं । गोमूत्र चिकित्सा सिर्फ आस्था पर आधारित नहीं है, इसलिए विदेशों से भी बड़ी संख्या में मरीज, डॉक्टर और वैज्ञानिक इसमें रुचि ले रहे हैं । विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाईट www.cowurine.com बनाई गई है । इस पर विजिट कर पीड़ित मरीज गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से हुए लाभों को देख सकते हैं ।

पंचगव्य गौमूत्र और हर्बल्स से बनी कैंसर की दवाईयां से हजारों मरीज लाभान्वित

हमारे पावन ग्रंथो और आयुर्वेद में गौमूत्र पंचगव्य का विशेष उल्लेख मिलता है जो अर्बुदरोधक है और कैंसर की बीमारी से छुटकारा दिलाने में मदद करता है । इस बात को आधार बनाकर जैन्स काउ यूरिन थैरेपी हेल्थ क्लिनिक इंदौर के प्रमुख एवं खोजकर्ता श्री वीरेंद्रकुमार जैन लगातार वर्षों से रिसर्च एवं क्लीनिकल ट्रायल्स कर कैंसर की प्रभावी दवाई बनाने में सिर्फ सफल ही नहीं हुए है बल्कि हजारों कैंसर मरीजों को लाभान्वित कर चुके है । श्री जैन ने बतलाया की कैंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) लखनऊ को गौमूत्र पर कैंसर के लिए अमेरिकन पेटेंट भी प्राप्त हुआ है । भारत सरकार के आयुष विभाग के अन्तर्गत कार्य कर रहे सेण्ट्रल कौंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (सीसीआरएएस) द्वारा जिन जड़ी बूटियों पर एन्टी कैंसर रिसर्च किया गया उनको गौमूत्र के साथ फैक्टरी में प्रोसेस किया गया और कैंसर की दवाई बनाई गई । दुर्लभ जड़ी बूटियों को गौमूत्र के साथ प्रोसेस करने से जड़ी–बूटियों की गुणवत्ता भी कई गुना बढ़ जाती है । इसलिए कैंसर की ये मेडिसिन एक और एक मिलकर दो के बजाय ग्यारह का काम कर रही है । कैंसर के लिए गौमूत्र और जड़ी बूटियों से बनी दवाई कीमोट्रिम सिरप, हिपोरील सिरप, टॉक्सीनॉल सिरप, एन्सोक्योर कैप्सूल और टोनर लिक्विड को आयुष विभाग द्वारा वर्ष 2000 में ड्रग लाइसेंस भी दिया गया है और इसे 2003 में भारत सरकार के पेटेंट विभाग से पेटेंट भी

प्राप्त हो चुका है ।

ज्ञातव्य है की जूनागढ़ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने रिसर्च कर पता लगाया है की गौमूत्र में 5100 तरह के तत्व है उसमें से 388 तत्व निकले गए है जिसमें सोना भी है चाँदी भी है ऐसे अनेकों तत्व है जो मनुष्य के इम्यून सिस्टम को स्ट्रांग भी करते है । कैंसर सेल्स को मल्टीप्लाय होने से रोकते है और उन्हें खत्म करते है ।

सभी तरह के कैंसर के मरीज जो फर्स्ट स्अेज से लेकर लास्ट स्टेज के थे गौमूत्र से बनी दवाइयों से लाभान्वित हुए हैं । मेडिकल रिव्यु हेतु विभिन्न प्रकार के 250 कैंसर मरीज जिनकी औसत उम्र 50 वर्ष थी लिए गए । 6 माह के औसतन उपचार में 73 प्रतिशत लाक्षाणिक लाभ देखा गया। ऐसे मरीज जिनकी सर्जरी, कीमोथैरेपी, रेडिएशन होने के बावजूद उनकी लाइफ 2–4–6 महीने बतलायी गयी थी उन्हें गौमूत्र से बनी इन दवाइयों से ट्रीटमेंट किया गया तो उनकी लाइफ साल दो साल पाँच साल बढ़ गी । और वो जितने भी साल जिए खाते पीते बगैर असहनीय वेदना के क्वालिटी ऑफ लाइफ के साथ जिए ।

देश में कैंसर के बढ़ते हुए मरीजों के लिए यह खोज अत्यन्त कारगर साबित हो रही है, जिसके कोई साइड इफेक्ट्स भी नहीं हैं। रिसर्च से यह भी बात भी साबित हुई है की कीमोथैरेपी या रेडिएशन के पहले, बाद में या साथ में गौमूत्र से बनी इन दवाईयाँ का सेवन करने से, कीमो और रेडिएशन के साइड इफेक्ट्स भी अपेक्षाकृत काफी कम हो जाते हैं ।

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन द्वारा पिछले 20 वर्षों में गौमूत्र चिकित्सा पद्धति 12 लाख मरीजों का इलाज कर विश्व रिकॉर्ड बनाया गया है जो की वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड्स लंदन द्वारा

दर्ज किया गया है । सुप्रसिद्ध गायक श्री बप्पी लहरी, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्डस इंग्लैंड के चेयरमैन डॉ दिवाकर सुकुल ने विश्व कीर्तिमान का अवार्ड देकर इंदौर के श्री वीरेन्द्रकुमार जैन को सम्मानित किया ।

कैंसर मरीजों के अनुभव–

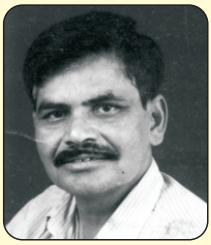

श्री गोवर्धन पटेल लम्बे समय तक सिगरेट व शराब का सेवन करने वाले श्री गोवर्धन पटेल को मुंह सूखना, गले में दर्द, बोलने में तकलीफ, बुखार बना रहना आदि तकलीफें थीं । टाटा मेमोरियल अस्पताल (फाइल नंबर बी आर–10938) में जाँच करवाने पर मालूम हुआ की उन्हें स्वर यन्त्र का कैंसर हैं । उन्हें इलाज के रुप में शल्य चिकित्सा की सलाह दी गई । दवाइयाँ और रेडियोथेरेपी से और तकलीफ होने लगी । जनवरी 2001 में उन्होंने जैंस काऊ यूरिन थैरेपी हेल्थ क्लिनिक इंदौर से इलाज प्रारम्भ किया । उन्हें बोलने में तकलीफ, बुखार आदि से निजात मिल गयी । टाटा मेमोरियल अस्पताल में उनकी एक वर्ष पश्चात जाँच करने पर सामान्य पाया गया और वर्षों तक उन्होंने सामान्य जीवन जीया । वर्ष 2017 में उन्होंने प्रेस क्लाब इंदौर में पत्रकारों को जैंस काऊ यूरिन थैरेपी से हुए लाभों की जानकारी देते हुए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बतलाया की सैकड़ों मरीजों को उन्होंने जैंस काऊ यूरिन थैरेपी से इलाज करने करने की सलाह दी और अधिकांश लोगों ने लाभान्वित होकर उन्हें धन्यवाद भी दिया ।

श्री देवकुमार जैन–देव कुमार जैन वर्ष 2003 से पीठ के कैंसर से पीड़ित थे। ऐलोपैथिक इलाज के बावजूद गांठ लगातार बढ़ती जा रही थी । उन्होंने जैंस काऊ यूरिन थैरेपी क्लिनिक इंदौर पर विजिट की । डॉक्टर्स के बतलाये अनुसार

गौमूत्र और हर्बल्स से बनाई गई दवाइयों से इलाज प्रारम्भ किया । डेढ़ वर्ष के इलाज में पूर्ण स्वस्थ्य हो गए । पहले वजन 48 किलो था और आज यह 68 किलो है । अब कैंसर से पीड़ित नहीं है और पूरी तरह से ठीक और संतुष्ट हैं । खास बात यह रही की गौमूत्र से बनी दवाई से इलाज करेंगी ताकि कोई रिस्क नहीं रहे । आज बीस वर्ष पश्चात 2023 में भी वे पूर्णतः स्वस्थ्य है और किसी तरह की तकलीफ नहीं हैं ।

अभी तक जैंस काऊ यूरिन से एक लाख से अधिक कैंसर मरीज इलाज करवा चुके है । सभी को ऐसा लाभ मिला की उनके परिवार में कोई भी बीमारी से पीड़ित होता है तो वो सिर्फ जैंस काऊ यूरिन थैरेपी से ही इलाज करते है । उनका अनुभव बतलाते है की इस थैरेपी के कोई साइड इफेक्ट्स भी नहीं होते है और पूरे शरीर की ओवरहॉलिंग हो जाती है ।

अधिक जानकारी के लिए सुबह 9.30 से शाम 6.30 बजे के बीच डॉक्टर्स से संपर्क करें–

जैंस काऊ थैरेपी हेल्थ क्लिनिक 165 आरएनटी मार्ग इंदौर– 452001

फोन/व्हाट्सप्प–

0731–3599100,

वेबसाइट–

cowurine.com

100% ORGANIC

Swaarnim NATURAL FARMING

भारत में पहली बार इंटीग्रेटेड (आल इन वन) लिक्विड आर्गेनिक मेन्युअर फोलियर स्प्रे

पंचगव्य से निर्मित

गव्यामृत
Gavyamrut

आर्गेनिक लिक्विड यूरिया,माइक्रोन्युट्रिएंट्स, एन.पी.के (NPK), माइक्रोऑर्गेनिज़्म, प्लांट प्रोटेक्टर - All in One

■ **गव्यामृत एक लिक्विड आर्गेनिक मेन्युअर है ।** यह एक आल-इन-वन इंट्रीगेटेड फ़र्टिलाइज़र एवं प्लांट प्रोटेक्टर प्रोडक्ट हे जिसका उपयोग फल, सब्जी, दहलन, तिलहन, अनाज, फसलों, फूल, पोधो एवं सजावटी पोधो पर किया जाता हे | जब पत्तियों पर इसका छिड़काव किया जाता है तो गव्यामृत आसानी से रंध्रों (स्टोमेटा) और अन्य छिद्रों के माध्यम से पौधे में प्रवेश कर जाता है | और पौधों की कोशिकाओं द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है | यह पौधों में फ्लोएम के माध्यम से आवश्यकता के अनुसार वितरित होता है | अप्रयुक्त नाइट्रोजन सहित अन्य सभी तत्व पौधे के रिक्तिता में स्टोर रहता है और पौधे के उचित विकास और वृद्धि के लिए धीरे धीरे छोड़ा जाता है ।

■ **गव्यामृत में 4% नाइट्रोजन** (W/V) समान रूप से मिला हुआ है । गव्यामृत में है लिक्विड यूरिया,अमोनिया, यूरिक एसिड,खनिज, एल्कलॉइड्स जो नाइट्रोजन युक्त यौगिक है। यह नाइट्रोजन के स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो पौधों के विकास के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व है।

■ **गव्यामृत प्लांट प्रोटेक्टर भी है** जो कीटों को भी रोकता है और पौधों पर आक्रमण करने वाले कीड़ों को दूर भगाता है या उन्हें रोकता है। हवा में मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया एवं वायरस को समाप्त करता हे|

■ **गव्यामृत में है** माइक्रोऑर्गेनिज़्म (2x10^{8} CFU/ml) एजोटोबेक्टर, एजोस्पिरलम, राइजोबियम, पीएसबी, केएसबी, ज़ेडएसबी, एसएसबी जो पौधों को नाइट्रोजन,फॉस्फेट, पोटैशियम (NPK), जिंक, सल्फर उपलब्ध करते है ।

■ **गव्यामृत में है** माइक्रोन्युट्रिएंट्स जो पौधों को खाद्य प्रक्रिया, क्लोरोफिल बनाने, फ्लॉवरिंग और फ्रूटिंग, बीमारियों से बचाव, पौधों की स्थिरता में सपोर्ट करते है|

गव्यामृत मिट्टी, हवा और पानी की गुणवत्ता के सरंक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण मदद करता है |

उपयोग - गव्यामृत 10 मि ली प्रति लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पत्तियों पर छिड़काव करना चाहिए | हर 15 दिन में छिड़काव किया जा सकता है |

Swaarnim
Naturscience Limited

- 165, R.N.T. Marg,Indore : 452 001 (M.P.)
- Email : mail@swaarnim.com
- Customer Care # 9301514792, 9893052003

अनेकों गुणों वाला

देशी गाय का गोबर

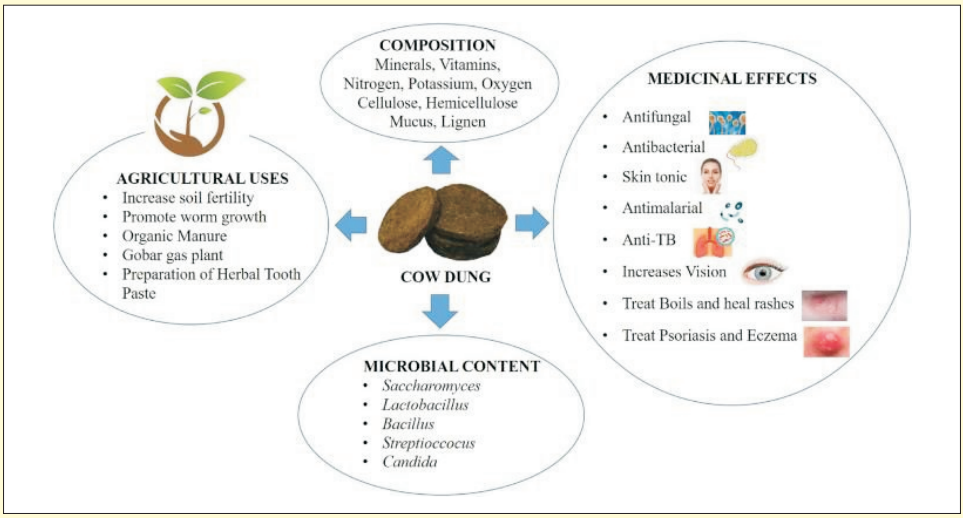

गाय का गोबर कई लाभकारी रोगाणुओं जैसे एस एक्रोमाइसेस, एल एक्टोबैसिलस, बी एसिलस, एस ट्रेप्टोकेकस, सी एंडिडा आदि से समृद्ध है । इसमें खनिज, विटामिन, पोटेशियम, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन, सेलूलोज, हेमिकेलुलोज सहित विभिन्न पोषण घटक भी शामिल है । बलगम, लिग्निन, गाय के गोबर का उपयोग शहर और अस्पतालों से उत्पन्न कचरे को नष्ट करने के लिए किया जाता है क्योंकि इसमें कचरे को नष्ट करने के लिए फायदेमंद विभिन्न सूक्ष्म जीवों की प्रचुरता होती है ।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में, सूखे गाय के गोबर के केक का उपयोग भोजन पकाने के लिए ऊर्जा के स्रोत के रुप में किया जाता है, जिससे ऊर्जा के अन्य स्रोतों पर निर्भरता कम हो जाती है और यह पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल है और रोगाणुओं को मारकर वायु शुद्धि सुनिश्चित करता है । आसपास की हवा, गोबर गैस (बायोगैस) संयंत्र भी एक महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत के रुप में काम करते हैं । वे गाय के

गोबर को मीथेन गैस में परिवर्तित करते हैं, जिसका उपयोग खाना पकाने और बिजली उत्पादन के लिए ऊर्जा स्रोत के रुप में किया जाता है । इसके अलावा अधिकांश गोबर को मीथेन गैस में परिवर्तित करने के बाद बचा हुआ अवशेष सर्वोत्तम जैविक खाद है ।

गाय के गोबर से प्राप्त रेशेदार पदार्थ का उपयोग कागज बनाने में किया जाता है । हाल ही में, गाय के गोबर पर आधारित मच्छर निरोधक कृत्रिम मच्छर निरोधकों के सर्वोत्तम विकल्पों में से एक रहे हैं। इसके अलावा, गाय के गोबर पर आधारित टूथपेस्ट मौखिक रोगजनकों से बचाता है और मौखिक स्वास्थ्य में सुधार करता है । गाय के गोबर का उपयोग अधिक पर्यावरण–अनुकूल और लागत प्रभावी मानव गतिविधियों को सुनिश्चित करता है ।

मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कृषि में गाय के गोबर का उपयोग आवश्यक है। गाय का गोबर केंचुओं की आबादी बढ़ाने में मदद करता है, और केंचुओं की आइसेनिया आंद्रेई प्रजाति की उपस्थिति के साथ उपजाऊ मिट्टी को बढ़ावा देता है और प्रबंधित करता है , जो नाइट्रीकरण प्रक्रिया में वृद्धि दर्शाता है। कृषि क्षेत्रों में फंगल रोग प्रमुख समस्या में से एक हैं। गाय के गोबर का उपयोग फ्यूसेरियम ऑक्सीस्पोरम, फ्यूसेरियम सोलानी और स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम के कारण होने वाले ऐसे फंगल मुद्दों के विकास को रोक सकता है। कृषि पद्धतियों में कीटनाशकों, उर्वरकों,

खरपतवारनाशकों और एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग मनुष्यों और जानवरों के लिए खतरनाक है, और इससे इम्यूनोसप्रेशन, अतिसंवेदनशीलता प्रतिक्रिया और ऑटो–प्रतिरक्षा विकार जैसी गंभीर बीमारियाँ होती हैं। इसलिए, जैविक खेती से प्राप्त उत्पादों की अधिक मांग है क्योंकि जैविक खेती पद्धतियां फसल उत्पादन के लिए हानिकारक रसायनों से रहित हैं। उच्च माइक्रोबियल गिनती और पोषण मूल्य ने गाय के गोबर को जैविक खेतों में खेती के लिए खाद के रूप में उपयोग किया है। गाय का गोबर इन रसायनों के सर्वोत्तम प्रतिस्थापन के रूप में कार्य करता है और मानव और पशु स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है ।

गाय के गोबर ने एंटी–बैक्टीरियल और एंटी–फंगल प्रभाव भी प्रदर्शित किया है ख2 , । यह त्वचा टॉनिक के रूप में कार्य करता है और सोरायसिस और एक्जिमा के इलाज में प्रभावी पाया जाता है। कुचली हुई नीम की पत्तियों और गाय के गोबर का मिश्रण फोड़े–फुंसियों और घमौरियों से बचाने में मदद करता है। गाय के गोबर ने प्रदर्शित किया है कि यह मलेरिया परजीवी और माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस को मार सकता है । कॉरप्रोफिलस कवक 20 , 21 , के खिलाफ एंटी–फंगल गतिविधि देखी जा सकती है । गाय के गोबर को जलाने पर निकलने वाले धुएं से आंखों में जलन होती है और आंसू आते हैं, जिससे दृष्टि बढ़ाने में मदद मिल सकती है। गाय के गोबर की संरचना, उसके उपयोग सहित, को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है ।

स्वर्णिम फाउंडेशन 3000 दिव्यांग बच्चों की निःशुल्क सर्जरी के लक्ष्य की ओर अग्रसर

इंदौर, 12 सितंबर । स्वर्णिम फाउंडेशन के माध्यम से उन बच्चों के जीवन को सुधारने में मदद कर रहे हैं, जिन्हें एक नई आशा और नई संभावनाएं प्राप्त करने का अधिकार है।उपरोक्त विचार मुख्य अतिथि समाजसेवी कपिल जैन एवं पूजा जैन ने व्यक्त करते हुए कहा कि दिव्यांग बच्चों का यह सर्जरी शिविर फाउंडेशन के संघर्ष और समर्पण का परिचय है। प्रशंसनीय लक्ष्य है कि हर दिव्यांग बच्चा खुद को एक सशक्त और स्वावलंबी व्यक्ति के रूप में देख सके, जिसके पास उसकी ख्वाहिशों और सपनों को पूरा करने का समर्थन हो।

मानव सेवा के मसीहा वीरेन्द्र कुमार जैन ने बतलाया कि यह कैंप 30 नवम्बर तक चलेगा । रजिस्ट्रेशन हेतु दिव्यांग बच्चे का पहले फोटो और विडियो बुलवाया जाता है । सर्जन कंफर्म करते हैं कि सर्जरी हो जाएगी तब उन्हें बुलाया जाता है ।

मरीज को आने जाने के लिए एक हजार रू की मदद भी की जा रही है ।जैन ने कहा कि इस सर्जरी शिविर के माध्यम से हम न केवल दिव्यांग बच्चों के स्वास्थ्य को सुधार रहे हैं, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी मजबूत कर रहे हैं। यहां हर कदम पर हमारी टीम उन्हें मोटिवेट करती है, उनके साथ है, और उन्हें उनकी जीवन की दिशा में नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने की कोशिश कर रही है ।

अध्यक्ष विवेक शारदा जैन ने बताया कि लगातार दिव्यांग बच्चों का आना प्रारंभ हो गया है और उनकी निः शुल्क सर्जरी के साथ अभिभावक की भी खाने पीने रहने की व्यवस्था हास्पिटल में की गई है ।हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ प्रमोद नीमा एवं टीम द्वारा सर्जरी की जा रही है ।

SWAARNIM FOUNDATION INDORE

गव्यसिद्ध (पंचगव्य विशेषज्ञ)

पंचगव्य डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट

गव्यसिद्ध बनने के बाद निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं

- खुद की प्रैक्टिस : आप प्राइवेट प्रैक्टिस खोलकर अपने खुद के चिकित्सा केंद्र का संचालन कर सकते हैं।
- आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र : पंचगव्य थेरेपी द्वारा चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए आप आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्रों में जॉब कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य संगठनों : आप अस्पताल, आयुर्वेदिक क्लिनिक, प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, योग और आयुर्वेद संस्थान में नौकरी कर सकते हैं।
- फार्मेसी में पर्यवेक्षक: आप फार्मेसी में पर्यवेक्षक के रूप में काम कर सकते हैं।
- गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर: गव्यसिद्ध पंचगव्य थेरेपी प्रैक्टिशनर के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य सलाहकार: आप स्वास्थ्य सलाहकार के रूप में काम कर सकते हैं।
- वेलनेस सेंटर प्रबंधक: आप वेलनेस सेंटर प्रबंधक के रूप में काम कर सकते हैं।

पढ़ाने का तरीका

प्रशिक्षण पूर्व रिकॉर्ड किए गए डेमो, ऑनलाइन नोट्स, असाइनमेंट के माध्यम से किया जाता है। प्रत्येक विषय में विषयों की सूची होती है। प्रत्येक विषय को पूरा करने के लिए, आपको पहले विषय को पूरा करना होता है। एक विषय को पूरा करने के लिए आपको लॉगिन करना, डेमो देखना, नोट्स पढ़ना होता है।

एडवांस डिप्लोमा इन आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADAPT)

एडवांस डिप्लोमा इन इंटीग्रेटेड आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADIPT)

डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (DPT)

एडवांस डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (ADPT)

सर्टिफिकेट इन पंचगव्य थेरेपी (CPT)

उपरोक्त कोर्स होने के पश्चात आपको बीएसएस वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा | BSS भारत सेवक समाज, योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विकास एजेंसी है |

एडमिशन प्रारंभ

Visit - www.swaarnimfoundation.com

अधिक जानकारी के लिए QR CODE को स्केन करें

Swaarnim Naturscience Limited फार्मेसी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

स्वर्णिम फाउंडेशन

JAIN'S COW URINE THERAPY क्लिनिक

165, आरएनटी मार्ग, इंदौर - 452001 | 9301514792, 9893052003 | समय - सुबह 10 से शाम 6 बजे तक

वेबसाइट- swaarnimfoundation.com, ईमेल- mail@swaarnimfoundation.com

घुटनों का दर्द

बगैर सर्जरी मिल रही सफलता

घुटनों के दर्द का कारण

घुटनों के दर्द के कई कारण हो सकते हैं, और यह आपके आयु, जीवनशैली और आपके स्वास्थ्य के साथ जुड़े सम्बंधों पर निर्भर कर सकते हैं ।

1. **चोटः** घुटने को चोट लगने के कारण दर्द हो सकता है, जैसे कि खुदाई, गिरावट, या घुटनों के उपर गिरने के कारण ।

2. **ओस्टियोआर्थ्राइटिसः** यह एक सामान्य घुटने के दर्द का कारण होता है और ज्यादातर बडे आयुवर्ग के व्यक्तियों में पाया जाता है । इसमें घुटनों के जोड़ के कार्टिलेज का कमजोर हो जाना शामिल हैं, जिससे घुटनों में दर्द और स्थूलता हो सकती है ।

3. **रीमाटॉइड आर्थराइटिसः** यह घुटने के दर्द का अन्य एक कारण हो सकता है, जो जोड़ों की सूजन और दर्द के साथ आता है।

4. **घुटनों का चर्मरोगः** घुटनों के चर्म में रोग होने पर भी दर्द हो सकता है, जैसे कि सोरायसिस या एक्जिमा ।

5. **आपातकालीन परिस्थितियाँः** घुटने के दर्द का कारण बादली और दर्दनाक परिस्थितियों में से एक भी हो

सकता है, जैसे कि घुटनों की टकराव, घुटनों का पिचकना, या किसी दुर्घटना के कारण ।

6. **अन्य कारण:** अन्य कारणों में वयानुकूलित घुटनों का समस्या, घुटनों की पोर छलनी या घुटनों की शिराओं की क्षमता में कमी शामिल हो सकती है।

घुटनों के दर्द का लक्षण

1. **दर्द (Pain):** घुटनों के दर्द का सबसे प्रमुख लक्षण होता है । यह दर्द घुटनों के ऊपर, नीचे, आसपास या घुटने के पीछे हो सकता है।

2. **सूजन (Swelling) :** घुटनों के दर्द के साथ–साथ सूजन भी हो सकती है, जिससे घुटने में फूलने का अहसास होता है।

3. **स्थिरता या अकड़न (Stiffiness) :** घुटनों के दर्द के साथ घुटनों की मोटाई या फ्लेस्किबिलिटी में कमी हो सकती है, जिससे घुटने बंद होने लगते है ।

4. **गति की कमी (Reduced Range of Motion) :** घुटनों के दर्द के कारण व्यक्ति की घुटनों की गति में कमी हो सकती है, जिससे उन्हें उच्चालन, बैंडिग, या जुकाम

करने में परेशानी हो सकती है ।

5. **लड़खड़ाना या झुकाव (Instability of Buckling) :** घुटनों के दर्द के कारण व्यक्ति अकसर घुटनों पर गिर सकते हैं या घुटनों के बल पर नहीं खड़े रह सकते हैं।

6. **आवाज (Creaking of Popping) :** कुछ लोगों के घुटनों के दर्द के साथ घुटनों की आवाज आती है, जैसे कि खरगोश की चुट की आवाज आती है ।
7. **समस्या चलने में (Difficulty Walking) :** घुटने के दर्द के कारण चलने में कठिनाइयाँ हो सकती है और व्यक्ति लिम्प कर सकता है ।

घुटनों के दर्द से बचने के उपाय

1. **नियमित व्यायाम:** घुटनों के स्वस्थ्य को बढ़ाने और दर्द को कम करने के लिए नियमित व्यायाम करें। घुटनों की मांसपेशियों को मजबूत करने वाले व्यायाम जैसे कि स्कवाट्स, लंगूर व्यायाम और घुटने के मोटाई करने के लिए व्यायाम करें ।

2. **सही तरीके से सैद्धात व्यायाम करें:** जब आप व्यायाम कर रहे होते हैं, तो सही तरीके से तरीके से सैद्धांत व्यायाम करना महत्वपूर्ण होता है। सही तरीके से व्यायाम करने के लिए एक व्यायाम गुरु की मार्गदर्शन करें।

3. **वजन नियंत्रण:** अधिशिर वजन घुटनों के दर्द को बढ़ा सकता है, क्योंकि यह घुटनों पर अधिभार डाल सकता है। अपना वजन नियंत्रित रखने के लिए सही आहार और नियमित व्यायाम करें।

4. सही फूटवियर: उचित जूते चुनें और उन्हें ठीक से बाँधें, खासकर जब आप खेल रहे होते हैं या व्यायाम कर रहे होते हैं।

5. **सही तरीके से विश्राम:** दिनभर की मेहनत के बाद घुटनों को आराम देना महत्वपूर्ण होता है। अपने पैरों को ऊंचा रखकर आराम करें और घुटनों को आराम दे।

6. **ध्यानपूर्वक तरीके से उठना बैठना:** बैठने और उठने के समय ध्यानपूर्वक तरीके से बैठें और उठें, और अच्छे से आराम करें ।

7. **गर्माई:** सुबह के समय घुटनों को गर्माने से दर्द में राहत मिल सकती है

8. सही पोस्चर: बनाने के लिए

ध्यान दें, खासकर जब आप लंबे समय तक सीढ़ियों पर चढ़े रहते हैं।

घुटनों के दर्द में क्या नहीं खाना चाहिए

1. **तेलः** अत्यधिक तेल, खासकर अधिक सेचुरेटेड फैट वाले तेलों का सेवन कम करें, क्योंकि यह शरीर में अपच और सूजन को बढ़ा सकता है।

2. **शराबः** शराब का सेवन घुटनों के दर्द को बढ़ा सकता है, क्योंकि यह शरीर के इंफ्लेमेशन को बढ़ावा देता है और दर्द को बढ़ा सकता है।

3. **बहुरुपी अन्नः** अधिक सेचुरेटेड फैट्स और तड़का वाले खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें, जैसे कि फ्रेंच फ्राइज, पिज्जा, बर्गर, और प्रोसेस्ड फूड्स।

4. **बहुरूपी अन्नः** यदि आपके घुटने दर्द कर रहे हैं, तो अधिक डेयरी प्रोडक्ट्स, नमकीन बिस्किटस, और ब्रेड जैसी खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें, क्योंकि ये तड़का वाले हो सकते हैं और दर्द को बढा सकते हैं।

5. **शक्कर और प्रोसेस्ड फूड्सः** अधिक शक्कर और प्रोसेस्ड फूड्स का सेवन कम करें, क्योंकि यह इंफ्लेमेशन को बढ़ा सकते हैं और दर्द को बढ़ा सकते हैं।

6. **पुरीन युक्त आहारः** यदि आपके घुटनों में गठिया जैसी समस्या है, तो पुरीन युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें, जैसे कि मांस, मछली, दाल, और

बीयर।

घुटनों के दर्द में क्या क्या खाना फायदे कारक है

1. **सम्पूर्ण अनाज (Whole Grains):** अनाज जैसे कि गेंहू, चावल, ओट्स, और मिलेट में प्राकृतिक फाइबर और विटामिन बी3 होता है, जो घुटनों के स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकता है।

2. **हरी सब्जियां और फल (Fruits and Vegetables) :** विटामिन सी, बीटा–कैरोटीन, और अन्य पोषक तत्वों की खूबसूरती से भरपूर हरी सब्जियां और फल घुटनों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकते है।

3. **खासी मात्रा में प्रोटीन (Lean Protein):** प्रोटीन स्रोत से पूर्ण होने वाला प्रोटीन घुटनों के स्वस्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकता है ।

4. **विटामिन (D) :** विटामिन D की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए दूध, दही, और विटामिन D की युक्त खाद्य पदार्थो का सेवन करें, क्योंकि यह कैल्शियम के संश्लेषण में मदद करता है, जो घुटनों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
5. **नट्स और बीज (Nuts and Seeds) :** अखरोट, बादाम, ग्रीन सीड्स, फ्लैक्ससीड, और चिया सीड्स जैसे नट्स और बीज घुटनों के दर्द को कम करने में मदद कर सकते हैं, क्योंकि वे अंगूठी के पीछे की पट्टी में पाये जाने वाले लुब्रिकेटिंग तत्वों की युक्ति होते हैं।

6. **ओमेगा–3 फैट्सः** ग्रीन लोफी सब्जियां, और चिया सीड्स अलसी जैसे ओमेगा–3 फैट्स युक्त आहारों का सेवन करने से घुटनों के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

7. **तुलसी और जींजर (Tulsi and Ginger) :** तुलसी और अदरक की चाय घुटनों के दर्द को कम करने में मदद कर सकती है, क्योंकि इनमें गुणकारी एंटी–इंफ्लेमेटरी प्रॉपर्टी होती है।

8. **पानीः** पर्याप्त पानी पीना शरीर के सुगठित कार्यों के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे घुटनों के दर्द को भी कम किया जा सकता है।

घुटनों के दर्द का बेस्ट इलाज–

1. आयुर्वेदिक रुमालेक्स और बोनक्योर 3–3 चम्मच और केमोट्रिम सिरप 2–2 चम्मच दिन में दो बार लें।

2. आयुर्वेदिक स्पोंडीक्योर कैप्सूल 1–1 दिन में दो बार लें।

3. दिन में 2–3 बार आयुर्वेदिक ओमनी ऑयल से हल्की मालिश करें।
4. रोजाना लौकी को गर्म सूप के रुप में ले थोड़ी मात्रा में काली मिर्च, सौंठ, 5–5 पत्तियां तुलसी, पुदीना (पुदीना का पौधा)
5. रोजाना 1–1 चम्मच आयुर्वेदिक फोर्टेक्स पाक दिन में दो बार लें।
6. सुबह–शाम दूध में आधा चम्मच हल्दी पाउडर डालकर उबालें।

VU
TRAVELS

Travel with our own chef
100% veg / jain food on most of our tours

South Africa

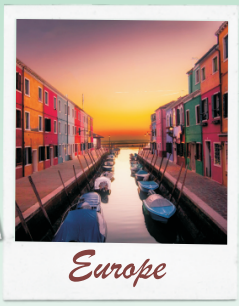
Europe

Dubai

Turkey

Bali

New Zealand

Singapore

Leh

Australia

Vietnam

Kashmir

Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

www.vutravels.com nmehta@vutravels.com @VUtoursandtravels